भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-7, अंक-9	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
रविवार, 25 सित. ' 83	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 1.00

अमर गुणातीतभावना लाई शरद् पूर्णिमा.....

समय-समय पर धरती पर कई युगपुरुष-अवतार पुरुष मानवजाति को सुखी करने, जीवन की अनंतता स्पष्ट करने आये और सभी ने अपने-अपने ढंग से सदा सुखी होने का मार्ग बताया। प्रभु महावीर आये; इन्होंने देहदमन और कठिन तपस्या का मार्ग चुना, ईसामसीह आये; इन्होंने मानवप्रेम और सेवा को अधिक महत्त्व दिया, मुहम्मद आये; इन्होंने संगठन एवं कुरबानी का रास्ता अपनाया, जगद्गुरु शंकराचार्यजी आये; इन्होंने ज्ञानमार्ग प्रवृत्त किया। श्रीमद् वल्लभाचार्यजी आये; इन्होंने भक्तिमार्ग को अधिक श्रेष्ठ माना। किन्तु जीवन के अंतिम ध्येय के सम्यक् दर्शन सहित खूब आसान व सरल साधना बतायी महाप्रभु स्वामिनारायण ने ! सम्पूर्ण मानवजाति को उन्होंने अभय, निश्चन्तता वक्ष के सदा सुहागिन रहने के अखंडित आशीर्वाद दे दिये और 'सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु....' की एक अनमोल एवं उदात्त भावना के साथ प्रभु स्वयं मानवरूप में पृथ्वी पर आये। इतना ही नहीं बल्कि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतनन्दस्वामी को साथ में लाकर धरातल पर इनके माध्यम से ऐसे गुणातीतभावना में निरंतर अखंड रहते संतों व जीवनमुक्तों द्वारा अपना प्राकट्य सदा के लिये अखंडित कर दिया। मानव जाति पर प्रभु की कैसी करुणावात्सल्यता! एक अनोखी परम्परा से पृथ्वी को सदा सनाथ कर दी !

अनादिकाल से जीवात्मा वासना व स्वभाव के बंधनों में उलझा हुआ है। अपने स्वप्रयास से की गई साधना व लाख साधनों से भी वह इससे मुक्त नहीं हो सकता। उस बंधन से छूटने, वासना व स्वभाव को जड़ से उखाड़ देने....अखंड सुख, शान्ति व आनन्द पाने और सम्पूर्णतया निश्चिन्त एवं निर्भय जीवन प्राप्त करने कीर्ति, कांचन और कामिनी के रस या रागविहीन परम निर्दोष विभूति का प्रकट अस्तित्व अनिवार्य है ही। मानवस्वरूप में प्रभु या प्रभुस्वरूप ऐसे संत एक आदर्श देने, सही राह स्पष्ट करने धरातल पर सदा सर्वदा जरूरी है ही। प्रभु धारण किये ऐसे संत के संबंध

में आकर कोई भी सेवक इनके प्रति यदि केवल सद्भावना मात्र ही रखे तो संत उसे कोई कठिन तपश्चर्या-साधना किये बिना ही आध्यात्मिक राह के अंतिम ध्येय पर पहुँचा कर सदा सर्वदा सुखी कर दे.....। यह तो निःसन्देह बात है कि जो स्वयं निर्दोष हो, वही दूसरों को निर्दोष कर पायेगा, जो स्वयं प्रभु मय होगा वही प्रभुता बक्षने की ताकत रखता होगा, जो स्वयं स्वभाव, वासना के दायरे से मुक्त होगा वही चौरासी लाख योनियों के चक्कर से छुड़ा पायेगा। जिसके पास स्वयं अमृत होगा....वही अमृत बांट पायेगा। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामी ने तो अपनी बातों में आज से दो सौ साल पहले आज की वैज्ञानिक तरक्की मिसाल लेकर स्पष्ट कह दिया कि–जो काम–जो साधना करते-करते कई जन्म बीत जायें तब भी जो शक्ति, सामर्थ्य, ऐश्वर्य एवं सुख हम न पायें, वह मात्र एक ही दिन में देने की भावना महाराज ने रखी है...और इसी हेतु गुरु गुणातीत के माध्यम से ज्योत से ज्योत जला कर सम्पूर्ण मानवजाति पर सदा के लिये अनुपम करुणा बरसा दी।

सही दृष्टि से देखा जाये तो यदि गुणातीतानंदस्वामी धरातल पर नहीं आते तो पूर्ण पुरुषोत्तम श्री सहजानंदस्वामी की दिव्य कल्याणयोजना मानव-सुलभ नहीं हो पाती और 'संत' एक काल्पनिक शब्द ही बन जाता। इन्होंने महाराज की मानवस्वरूप में पहचान करवा कर एक आदर्श ही स्थापित नहीं किया, बल्कि उस युग में अपने अनोखे निराले ढंग से एक नई क्रान्ति ला दी...एक नया ही दर्शन कराया। स्वामी और नारायण के उस विशिष्टताद्वैत आध्यात्मिक संबंध का हम क्या वर्णन कर पायेंगे? प.पू. काकाजी के शब्दों में 'अक्षर' के बिना मेरा (पुरुषोत्तम का) आर्विभाव शक्य नहीं है और मेरे बिना 'अक्षर' का अस्तित्व संभव नहीं है। कैसा अद्भुत संबंध होगा इस जुगल जोड़ी का?

एक बार वड़ताल में स्वामी कई बीमार संतों की सेवा में ठहरे हुए थे। अट्ठारह संतों की सेवा स्वामी अकेले करते थे। स्वामी हरेक संत को उसकी रुचि के अनुसार भोजन बना देते, पानी ला देते, स्नान करा देते, बिस्तर लगा देते, इनके वस्त्र-चद्दर आदि भी धो तेते थे। स्वामी की इस सेवावृत्ति का कई साधु स्वस्थ होते हुए भी नाजायज फायदा उठाने लगे और अपनी-अपनी चद्दरें भी धोने डालने लगे। और स्वामी तो...सभी को महाराज की मूर्ति मान कर महिमा से धोते भी थे !

एक बार तालाब से ढ़ेर सारी चद्दरें धोकर स्वामी कंधे पर उठाकर ला रहे थे। स्वामी का सारा शरीर पसीने से भीगा हुआ था। अचानक रास्ते में महाराज सामने से आते दिखाई पड़े और...स्वामी को इस दशा में देखकर खूब बेचैन हो गये। स्वामी की चित्तवृत्ति तो महाराज की मनमोहक मूर्ति में ही स्थिर हो गई। महाराज भी स्थिर हो गये ! इस प्रकार काफी क्षण बीत गये ! आखिर महाराज ने पूछा–स्वामी, अब तो चलने की मंजूरी दो। महाराज की मर्जी देखकर स्वामी ने दृष्टि हटा ली और...महाराज सभा में पधारे। किन्तु महाराजा का सारा शरीर थकान सी महसूस कर रहा था। यह देखकर कई सेवक पंखा करने लगे और पीने के लिये ठंडा पानी भी ले आये। तब महाराज ने कहा–स्वामी के कंधे पर जो बोझ है वह उतार कर ले आओ, तब मेरी बेचैनी-थकान

दूर होगी। तुरन्त ही एक सेवक जाकर स्वामी के कंधे से चद्दरों का गट्ठर उतार कर ले आया और महाराज के पास रख दिया। तब एकदम महाराज स्वस्थ जैसे दिखने लगे।

इसके पश्चात् महाराज ने मुक्तानंदस्वामी, ब्रह्मानंदस्वामी आदि संतों को बुलाकर पूछा–

'यह गुणातीतानंदस्वामी कैसे साधु है आप जानते हो?' तब सभी ने इनके कई गुणों की प्रशंसा करी। परन्तु महाराज ने कहा–आप सबने जो गुण कहे वह तो उनमें हैं ही, पर ये सब तो इनके ऊपरी गुण हैं... इनका आंतरिक सामर्थ्य आप नहीं जान पाये हो। सारी सभा स्तब्ध रह गई! महाराज ने परम गूढ़ रहस्य प्रकट करते हुए कहा–'ये तो महा समर्थ साधु हैं। और जैसे साँप को संड़ासी में कसकर पकड़ा जाता है वैसे ही इस साधु ने जागृत-स्वप्न और सुषप्ति–इन तीनों अवस्थाओं में हमारी मूर्ति को पकड़ रखा है।'

महाराज के मुख से यह सुनकर सभी को स्वामी की महिमा का कुछ ख्याल आया। परन्तु महाराज की इस बात का तात्पर्य न समझ पाने के कारण एक सेवक ने स्वामी को कह दिया– 'बेटी का बाप, गुणातीत, महाराज को यूं क्यों तंग करता है?' लेकिन उस समय स्वामी की मूर्ति कुछ अलौकिक ही दिखाई देती थी।

इसके पश्चात् महाराज ने सब संतों को कहलवाया कि सब आकार अपनी-अपनी चद्दरें ले जायें। जो संत बीमार थे वे तो आकर ले गये परन्तु....जो स्वस्थ थे वे शर्म से सर झुकाकर खड़े रह गये। वे अन्तर में समझ गये कि महाराज ने बिना कुछ कहे ही शिक्षा दे दी है कि सेवा तो हमें स्वामी की करनी है और इनसे जो सेवा हमने करवाई, वह तो सच में भारी भूल करी।

आज भी यह प्रसंग हमें अंतर्दृष्टि करा जाता है कि हम सेवा करने आये हैं या सेवा देने आये हैं?

सच में, स्वामी तो इस धरातल की–ऐसे अनंत ब्रह्मांडों की चैतन्य जननी थे। धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति आदि अनेक कल्याणकारी गुण इनमें पराकाष्ठा पर पहुँचे हुए थे, फिर भी अत्यंत सामान्य जीव जैसे बनकर केवल एक महाराज की ओर दृष्टि रखकर ही इन्होंने सबकी सेवा करी....यह हमने ऊपर लिखित प्रसंग से अनुभव भी किया। महाराज के सामर्थ्य को वे जानते थे और मन, स्वभाव के जटिल बंधनों से मानव को छुड़ाकर सर्वदा सुखी करने की ही एक मात्र उनकी भावना था। स्वप्रयत्न से करी हुई साधना से वासना और स्वभाव पर हम नियंत्रण (Controlling) तो कर पायेंगे, परन्तु प्रकृति को जड़ से टाल कर चैतन्य दिव्यजीवन को पायें, वह तो ऐसे गुणातीत संत की कृपा दृष्टि के ही अधीन है और गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी शक्ति सामर्थ्य को जानते हुए भी सबके गुलाम बने, विनय किया और महाराज में जोड़े... अनेकों का कल्याण किया, जड़ को चेतन बनाये, असुरों के हाथ में माला पकड़ाई, गरीबों के वे दाता बने !

अपने संबंध में आये हुए छोटे-बड़े, गरीब-अमीर, ज्ञानी-अज्ञानी, स्त्री-पुरुष सभी की आध्यात्मिक चेतना को जागृत करके उन्हें आध्यात्मिक विकास की पराकाष्ठा व शाश्वत सुख की भूमिका में ले जाने, जब जहाँ जरुरत होती थी वह अपने दिव्य कल्याणकारी गुणों के दर्शन भी कराते थे। कईयों को अनुभव भी

कराये। इनकी वाणी में ही ऐसा जादू था कि कोई ठीक से सुन भी न पाये या समझ भी न पाये, तब भी आनंद की एक लहर में सब खींचे जाते थे और इनके बन जाते थे। महाराज का संबंध पाये हुए भक्तों को जब स्वामी मिलते थे तब वे स्वयं ही इतने अधिक प्रसन्न हो उठते थे कि प्रसन्नता की उन तरंगों से ही सेवक भाव-भीना हो जाता था और सेवक को दिल में ही ऐसा आनंद महसूस होता था कि मानो उसे स्वामी के रूप में महाराज ही मिले हों। महाराज का साक्षात् निवास ही तो था स्वामी में !

ऐसे पूर्ण ब्रह्म के उस मूल साकार स्वरूप की इस शरद्पूर्णिमा पर 21अक्तूबर को द्विशताब्दी मनाकर मानव समाज की सच्ची आध्यात्मिक क्रान्ति का यह महोत्सव हम इन गुणातीतभाव को पायी हुई दिव्य विभूतियों की सेरे छाया में बम्बई में मनायेंगे।

इस महामंगलकारी मौके पर स्वामी के जीवन का एक प्रसंग उभर कर सामने आता है....और हमें प्रेरणा कर जाता है कि हमारा संबंध प्रत्यक्ष स्वरूप के साथ ऐसा होना चाहिये जैसा स्वामी का महाराज के साथ था।

एक बार गढ़पुर में महाराज ने सभी संतों को कहा–'हमने आप सबको पंचवर्तमान (पांच नियम) पालन करने को कहा है उसका दृढ़ता से पालन करना और इसमें तनिक भी शिथिलता न आये इसलिए आप परस्पर एक दूसरे की जमानत दीजिए। इससे महाराज का उद्देश्य साधुओं की साधुता को सुदृढ़ करना ही था। जब यह जमानत प्रकरण हुआ तब गुणातीतानंदस्वामी सभा में आ पहुँचे और महाराज को साष्टांग दंडवत् प्रणाम करके एक ओर बैठ गये। तब सद्. ब्रह्मानंदस्वामी बोल उठे–

'गुणातीतानन्दस्वामी भी आ गये। इनकी जमानत कौन देगा? हमने तो परस्पर जमानत दे दी। अब कोई शेष नहीं बचा है।'

सद्. ब्रह्मानंदस्वामी की यह बात सुनकर महाराज हंस पड़े और बोले–

'स्वामिन् ! इनकी जमानत तो मैंने स्वयं कब से दे दी है...और इनका तो मैं हमेशा का जामिन हूँ ही !'

महाराज के इन वचनों को यदि हम गहराई से सोचें तो इसमें वे बहुत कुछ स्पष्ट कह गयें। कैसा भरोसा होगा महाराज को स्वामी का ! सेवक तो प्रभु पर भरोसा रखता ही है और उसे रखना भी चाहिये, परन्तु प्रभु को सेवक का भरोसा आ जाये उसमें ही तो जीवन की परम धन्यता है–यह सत्य स्वामी के जीवन से प्रगट होता है। स्वामी भी तो महाराज की अनुवृत्ति में निरंतर रहते थे। इनके सभी संकल्प, क्रिया और भाव महाराज के ही अधीन थे। महाराज में से जो और जितना आवे वही वे करते थे। स्वयं निराकार होकर साकार महाराज को इन्होंने सांगोपांग धारण कर रखे थे। स्वामी ने जो आदर्श जीवन जिया उससे उन्होंने स्पष्ट समझाया है कि प्रत्यक्ष स्वरूप की मरजी के मुताबिक चलना और सिर्फ गुरुमुखी जीवन जी कर, इनका विश्वास पाकर इन्हें राजी कर लेना–यही सच्ची साधना की पूर्णाहुति है। गुरु गुणातीत के प्रागट्य के महामंगलकारी अवसर पर महाराज, स्वामी और प्रत्यक्ष गुणातीतस्वरूपों के पास दिल की प्रार्थना है कि वे हमें ऐसा पवित्र बुद्धियोग प्रदान करें......

प.पू. काकाजी का स्वदेशागमन.....

प.पू. काकाजी का विदेश से लौटने का समय जैसे-जैसे नजदीक आ रहा है.....सभी भक्तों के हृदय हर्ष व आनन्द से नाच उठे हैं।

यह पत्रिका आपके पास पहुँचेगी तब तक में तो प.पू. काकाजी विदेश से लौट आये होंगे....दि. 27 को बम्बई में इनका भव्य हार्दिक स्वागत होगा और अक्टूबर के प्रारंभ में वे दिल्ली भी पधारेंगे। इनके दर्शन, स्पर्श, सेवा और समागम का मौका सच्चे भक्ति भाव से हमें लूट लेना है। सेवक का सच्चा स्वधर्म ही बिना कोई अपेक्षा भक्ति अदा करना है.....तो अंतर के ऐसे सच्चे भक्तिभाव से प.पू. काकाजी का स्वागत करके हम धन्यता को पायें—यही प्रार्थना है।

☆

☆☆☆

....और श्रीजी महाराज ने कहा—

9. जिसके हृदय में भगवान की भक्ति है, उसकी ऐसी वृत्ति रहती है कि 'भगवान तथा सन्त मुझे जो जो वचन कहेंगे वैसे ही मुझे करना है।' ऐसी उसके हृदय में हिम्मत रहनी चाहिये और इतना वचन मुझसे माना जायेगा और उतना नहीं माना जायेगा ऐसा तो उसे भूलकर भी नहीं कहना चाहिये और भगवान की मूर्ति को अपने हृदय में धारना—उसमें वीरता रखे तथा मूर्ति को धारते-धारते भी यदि न धारी जाये तो भी उसे कायर नहीं होना चाहिये। उसे नित्य नयी श्रद्धा रखनी चाहिये। मूर्ति को धारते समय जब बुरे संकल्प उठ आयें और उनके हटाने पर भी न हटे तो भगवान की बड़ी महिमा समझकर अपने को पूर्णकाम मान कर उन संकल्पों को झूठा करता रहे तथा भगवान के स्वरूप को हृदय में धारता रहे। ऐसे धारते-धारते दस वर्ष हों, बीस वर्ष हों या पचीस वर्ष हों या सौ वर्ष हों तो भी कायर होकर भगवान के स्वरूप को धारना त्याग नहीं करना चाहिए; क्योंकि श्रीकृष्ण भगवान ने गीता में कहा है कि 'अनेक जन्म संसिद्धस्ततो याति परां गतिम्।' इस प्रकार जो भगवान को धारता रहे वह ही एकान्तिक भक्त कहलाते हैं।

गढ़डा प्रथम प्रकरण-15
रविवार, दिसं., 1819

☆☆☆

स्वामी की बातें

36. जिसकी भगवान और संत से प्रीति रहेगी उसको सब प्यार करेंगे। भगवान और संत से जो प्रतिकूल होंगे उससे सब प्रतिकूल होंगे। यह बात निश्चित समझ रखना, क्योंकि इसमें तनिक भी संशय नहीं है।

प्र.: 1-128

37. ये बातें तो जादू है, जो सुनता है वह पागल हो जाता है। पागल क्या है? तो उसे जगत मिथ्या हो जाता है। फिर उसे सयाना कौन कहेगा?

प्र.: 1-137

38. पहले तो मुमुक्षु भगवान को खोजते थे और आज तो भगवान मुमुक्षु को खोजते हैं। प्र.: 1-143

39. भीतर में ठंडक रहे और उद्वेग न हो— उसके दो उपाय हैं। एक तो भगवान का भजन करना और दूसरा भगवान को ही सभी के कर्ता समझकर सुख आवे तो सुख भोगना और दुःख आवे तो दुःख भोग लेना। सो कहा है कि—दास के दुश्मन हरि कभी नहीं हो सकते, वे जो भी करेंगे सुख ही देंगे। प्र. : 1-149

40. 'स्वामिनारायण' नाम के समान बलवान आज दूसरा कोई मंत्र नहीं है। इस मंत्र से काले नाग का विष भी शरीर में फैलता नहीं, न विषय ठहर सकता। जीवात्मा ब्रह्मरूप हो जाता है और काल, कर्म एवं माया के बन्धन से मुक्त हो जाता है। ऐसा खूब शक्तिशाली यह मन्त्र है। अतः निरन्तर भजन करना। प्र. : 1-154

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	1.10.83	शनिवार	श्रीजी महाराज एवं ब्र. स्व. जागास्वामी का श्राद्ध
2.	दि.	2.10.83	रविवार	ब्र. स्व. स्वामिश्री योगाजी महाराज का श्राद्ध
3.	दि.	3.10.83	सोमवार	एकादशी, व्रत
4.	दि.	4.10.83	मंगलवार	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी एवं ब्र.स्व. भगतजी महाराज का श्राद्ध
5.	दि.	15.10.83	शनिवार	नौमी, श्री हरिजयंती
6.	दि.	16.10.83	रविवार	दशहरा
7.	दि.	17.10.83	सोमवार	एकादशी, व्रत
8.	दि.	21.10.83	शुक्रवार	शरद्पूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की जयंती द्विशताब्दी निमित्त महोत्सव बम्बई।

PUBLISED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A-103, Ashokvihar-III, Delhi110052, India. Tel.: 7128838
Prined at R.P. printers, Shahadara, Delhi-110 032